International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

# रसखान के काव्य में भारतीय सांस्कृतिक प्रतिबिंब

**Mahaveer Prasad Yogi**

Assistant Professor - Hindi
Aradhana College Itawa Kota

**सारांश:**

**रसखान के काव्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन भारतीय संस्कृति की विविधता और उसकी गहरी आध्यात्मिक धारा को दर्शाता है। उनका काव्य भारतीय संस्कृति के एक अद्वितीय संगम के रूप में कार्य करता है, जिसमें हिंदू धर्म, भक्ति, और सांस्कृतिक परंपराओं की समृद्धि को जोड़ने का प्रयास किया गया है। रसखान के काव्य में भगवान कृष्ण को भारतीय संस्कृति का दिव्य प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो न केवल धार्मिक, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी सम्पूर्ण समाज में आदर्श हैं।रसखान ने भगवान कृष्ण की भक्ति को जीवन का उद्देश्य माना और कृष्ण के प्रति अपनी असीम श्रद्धा को काव्य के माध्यम से व्यक्त किया। वे कृष्ण को सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में स्वीकार करते हैं और उनके विविध रूपों को अपनी कविता में प्रकट करते हैं। कृष्ण की बाललीला, रासलीला, फागलीला, कुंजलीला, प्रेमवाटिका जैसी अनगिनत लीलाओं को रसखान ने अपनी कविता में बड़े ही सुंदर और सूक्ष्म तरीके से व्यक्त किया।**
**रसखान का वास्तविक नाम सैयद इब्राहिम था, लेकिन कृष्ण भक्ति के प्रति अपनी आस्था और समर्पण के बाद उन्होंने अपना नाम 'रसखान' रखा। उन्होंने धर्म और जाति की सीमाओं को पार करते हुए हिंदू संस्कृति को अपनी आस्था का केंद्र बनाया। उनका काव्य न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे अपने काव्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक तत्वों को एकजुट करने की कोशिश करते हैं।**

**मुख्य शब्द: संस्कृति, रसखान, कृष्ण भक्ति, भारतीय संस्कृति, काव्य**

भारतीय इतिहास में सभ्यता और संस्कृति के दृष्टिकोण से पुराणों का अत्यधिक महत्व है, क्योंकि इन पुराणों में न केवल धार्मिक ज्ञान है, बल्कि सांस्कृतिक इतिहास भी समाहित है। इस संदर्भ में, कृष्ण को सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में ढूंढ़ना पूरी तरह से उचित प्रतीत होता है। रसखान ने कृष्ण को अपने आराध्य के रूप में स्वीकार कर, अपनी भक्ति को समर्पित करते हुए अपनी रचनाओं में उन्हें विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। रसखान के काव्य में कृष्ण ऐसे कृष्ण हैं जो मुरली बजाते, नाचते, गाते और हंसते हैं, और उनके इस चित्रण में भारतीय संस्कृति का आदर्श रूप से प्रकाश दिखाई देता है।कृष्ण की प्रेम लीला का वर्णन न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। रसखान ने कृष्ण और राधा के प्रेम को आध्यात्मिक रूप में प्रस्तुत किया है, जो भारतीय संस्कृति में प्रेम और भक्ति के शुद्धतम रूप को उजागर करता है। उन्होंने अपने काव्य में प्रेम भक्ति के ऐसे तत्वों का प्रयोग किया है, जिनसे सांस्कृतिक मूल्य और तत्व स्पष्ट रूप से व्यक्त होते हैं।

रसखान अपने आराध्य कृष्ण के प्रति अपार प्रेम व्यक्त करते हुए, स्वयं को कृष्ण के चरणों में समर्पित करने की इच्छा जताते हैं। उनके लिए कृष्ण का सानिध्य ही सर्वोत्तम फल है, और वे इसके लिए किसी भी प्रकार का पुण्य

या कष्ट सहने को तैयार हैं। रसखान का यह भाव भारतीय संस्कृति की उन मर्यादाओं और उच्चतम आदर्शों की पुष्टि करता है, जिनमें व्यक्ति का आत्मसमर्पण और भक्ति सर्वोपरि है।रसखान का यह विचार कि कृष्ण के प्रति भक्ति का कोई स्थान या रूप निश्चित नहीं होता, बल्कि व्यक्ति का प्रेम और समर्पण ही उसे कृष्ण के साथ जोड़े रखते हैं, भारतीय संस्कृति की अनंतता और उसकी समृद्धि को दर्शाता है। वे कहते हैं कि चाहे वे मनुष्य हों, पशु-पक्षी हों या पत्थर, कृष्ण के साथ उनका संबंध हर रूप में बना रहे, यह उनकी सबसे बड़ी आकांक्षा है।उनके सवैयों में कृष्ण के प्रति इस अद्वितीय प्रेम और भक्ति का भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। रसखान के शब्दों में यह प्रेम इस प्रकार व्यक्त होता है:

"मानुष हौं, तो वही 'रसखानि' बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहां बसु मेरो चरौं नित नंद की धेनु मंझारन।
पाहन हौं तो वही गिरि को जो र्ध यो कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।"

यह शेर दर्शाता है कि कृष्ण के प्रति रसखान का प्रेम और भक्ति निरंतरता और अपारता से भरा हुआ है, जो भारतीय संस्कृति के गहरे आध्यात्मिक मूल्य और भावना को प्रकट करता है।यहां "ब्रज गोकुल" और "नंद" जैसे शब्द ब्रज की सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करते हैं। रसखान ने होली के त्योहार को भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा मानते हुए उसे अपनी रचनाओं में जीवंत रूप से प्रस्तुत किया है। रसखान के काव्य में होली का चित्रण न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि सांस्कृतिक तत्वों के माध्यम से भी बहुत प्रभावशाली है। उन्होंने राधा और कृष्ण के साथ होली के इस उत्सव को भारतीय संस्कृति की संपूर्ण रंगीनता और भावनात्मक गहराई के रूप में दर्शाया है। रसखान अपने काव्य में होली के दृश्य का विवरण करते हुए कहते हैं कि राधा और कृष्ण फाग खेल रहे हैं। कृष्ण की सुंदरता का वर्णन करना कठिन है, लेकिन रसखान ने इस चित्रण में भारतीय संस्कृति की झलक को बखूबी प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं:

“खेलतु फाग लख्खी पिय प्यारी को ता सुख की उपमा किहिं दीजै।
देखत ही बनि आवै भलै रसखान कहा है जो वारि न कीजै।
ज्यौं ज्यौं छबीली कहै पिचकारी लै एक लई यह दूसरी लीजै।
त्यौं त्यौं छबीलो छकै छवि छाक सो हेरै हँसे न टरै खरौ भीजै॥”

इन पंक्तियों में रसखान ने होली के उस दृश्य को चित्रित किया है, जिसमें रंगों से सराबोर कृष्ण और गोपियाँ अपनी प्रेममयी नृत्य-लीला में रममाण होते हैं। रसखान ने न केवल दृश्यात्मक छटा का वर्णन किया है, बल्कि यह भी दर्शाया है कि प्रेम और उल्लास की इस बेला में किस प्रकार से रंगों, कुंकुम, गुलाल और केसरिया पिचकारी से वातावरण रंगीन हो उठता है। राधा, जो अपने प्रेमी कृष्ण के साथ इस मनमोहक खेल में भाग ले रही है, उल्लास और आनंद से अभिभूत है। प्रेमी की सारी इच्छाओं की तृप्ति से एक प्रकार की मदहोशी छाई हुई है। रसखान ने यह सब कुछ उस समय की भारतीय संस्कृति की परंपराओं के अनुरूप अद्भुत तरीके से व्यक्त किया है।यह चित्रण भारतीय संस्कृति के उस आदर्श को प्रकट करता है, जिसमें प्रेम, उल्लास, और रंगों की अभिव्यक्ति एक साथ मिलकर जीवन को गहरे अर्थ और उल्लास से भर देती है। इस प्रकार, रसखान ने होली के त्योहार को भारतीय संस्कृति के समग्र स्वरूप में पूरी तरह से निबद्ध किया है।

रसखान ने अपनी रचनाओं में भारतीय संस्कृति के गहरे तत्वों को शामिल किया है, जिसमें नौ निधियों (पद्म निधि, महापद्म निधि, नील निधि, शंख निधि, नंद निधि, मकर निधि, कच्छप निधि, मुकुंद निधि, और खर्व निधि) और आठ सिद्धियों (अणिमा, लघिमा, महिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, और वशित्व) का प्रभाव स्पष्ट रूप से

दिखता है। इन तत्वों के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति के गहरे धार्मिक, आध्यात्मिक, और सांस्कृतिक आयामों को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है।

रसखान के काव्य में वियोग और संयोग दोनों की महिमा है। उनके काव्य में वियोग श्रृंगार की एक विशेष छवि है, जिसमें कृष्ण की वियोगवस्था की नर्मता और उसके दर्द का दृश्य अत्यंत प्रभावशाली है। वहीं, उनके काव्य में "प्रेमवाटिका" जैसे संयोग श्रृंगार के दृश्य भी दिखाई देते हैं, जो कृष्ण के प्रेम में पूर्णता और समर्पण की प्रतीक हैं। रसखान ने कृष्ण के दिव्य रूप और उनके ब्रजवासियों से गहरे प्रेम को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। वे कहते हैं कि द्वारिका में रहते हुए भी कृष्ण को ब्रज की याद आती है, और वे रुक्मणी से कहते हैं कि वे ग्वालों की लाठी और कम्बल के लिए तीनों लोकों का राज्य त्यागने को तैयार हैं। कृष्ण का प्रेम ब्रज की मिट्टी और वहां के हर दृश्य से जुड़ा हुआ है।

“या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहुँ पुर को तजि डारौ।
आठहु सिद्धि नवौ निधि को सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौ॥
ए रसखानि जबै इन नैनन ते ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौ।
कोटिक ये कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौ॥”

इन पंक्तियों में रसखान ने कृष्ण के ब्रजवास से जुड़ी गहरी भावनाओं को व्यक्त किया है। वह कहते हैं कि कृष्ण ब्रज के बागों, तालाबों, और जंगलों को अपनी आंखों से हमेशा देखना चाहते हैं, क्योंकि वही उनके जीवन का परम सुख है, चाहे इसके लिए उन्हें सिद्धियों और निधियों का सुख क्यों न त्यागना पड़े।रसखान की कविता में भावनाओं की गहरी प्रवृत्ति और स्वच्छंद भावों का प्रकट होना देखा जा सकता है। उन्होंने शास्त्रीय नियमों की अनदेखी करते हुए अपनी आत्मानुभूति को व्यक्त करने के लिए स्वयं का मार्ग चुना। उनका प्रेम विशुद्ध था, जो आत्मा की गहराई से निकलकर कविता में रूपांतरित हुआ।

“धूरि भरे अति सोभित स्यामजू,तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत खात फिरैं अंगना, पग पैजनि बाजति पीरी ‘कछोटी।।
वा छवि को ‘रसखानि’ बिलोकत, बारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सौं लै गयौ माखन-रोटी।।”

इन पंक्तियों में रसखान ने भगवान कृष्ण के बाल रूप की बहुत सुंदरता से चित्रित किया है। वह कृष्ण के बालपन के लीलाओं को और उनकी हर एक मुस्कान, हर एक गतिविधि को महसूस करते हैं। कृष्ण के द्वारा माखन रोटी छीनने वाले कौवे के भाग्य को भी रसखान ने सराहा है, जो एक अत्यंत मार्मिक रूप में उनके बाल लीला का प्रसंग प्रस्तुत करता है।रसखान ने अपने काव्य में भारतीय संस्कृति के विविध तत्वों को न केवल चित्रित किया है, बल्कि उन्हें अपने समय की गहरी और भावनात्मक संवेदनाओं के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है। उनके काव्य में कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति के निरंतर प्रवाह से भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक धारा को प्रकट किया गया है।

रसखान के काव्य की एक महत्वपूर्ण शिल्पगत विशेषता उसकी निरलंकृति है। यद्यपि रसखान ने अपने काव्य में अलंकारों का प्रयोग बहुत ही दक्षता से किया है, परंतु उनके काव्य में प्रेम की गहनता, अनन्यता, और हृदयबोधक सरलता ऐसी अवस्थाएँ हैं कि यहाँ अलंकारों का प्रयोग कभी भी जटिलता नहीं पैदा करता, बल्कि उनकी रचनाओं की सहजता और प्रवाह में एक विशिष्टता उत्पन्न होती है। रसखान का काव्य प्रेम, अनुभूति, और भक्ति का एक सीधा और प्रकट रूप है, जिसमें अलंकारों का प्रयोग उनके भावों के व्यक्तिकरण में अवरोध नहीं बनता, बल्कि उनकी कविताओं में एक सहज गहराई को प्रकट करता है।कहा जा सकता है कि रसखान एक रससिद्ध कवि हैं, जिनका काव्य सीधे हृदय से निकलकर पाठक तक पहुँचता है। रसखान के काव्य में यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास जैसी शिल्पगत विशेषताओं के उदाहरण मिलते हैं, जो उनके काव्य की

बारीकी और छायाओं को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। इसके बावजूद, रसखान के काव्य का प्रभाव शब्द चयन और छंद विधान की संरचना से अधिक समकालीन रचनात्मक प्रवृत्तियों के प्रभाव से निर्मित होता है। उनकी संवेदनाओं का साँचा उस समय की सांस्कृतिक और भावनात्मक धारा में ढलकर एक नई अभिव्यक्ति की ओर अग्रसर होता है।रसखान के शिल्प की जड़ें भक्त कवि निष्ठा, सहज स्वाभाविक भाषा प्रवाह, और कृष्ण भक्ति की गहरी धारा से जुड़ी हुई हैं। उनकी रचनाओं में कृष्ण के प्रति असीम प्रेम और भक्ति की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से उभरती है, जैसा कि भक्त कवियों के काव्य में सामान्यत: देखने को मिलता है। रसखान को दोहा, कवित्त, सवैया जैसे छंद अत्यधिक प्रिय थे, जो उनकी कविता की लयबद्धता और आंतरिक शांति को व्यक्त करते हैं।

रसखान के काव्य में कृष्ण की गोपियों के साथ भावनात्मक संबंधों को व्यक्त करने में एक अद्वितीय प्रकार की नयापन है। रसखान ने एक काव्य में गोपी की कृष्ण से जुड़ी भावनाओं को इस तरह से व्यक्त किया है कि उनकी सरलता और श्रद्धा के साथ साथ प्रेम का द्वंद्व भी झलकता है। एक गोपी अपनी सखी से कहती है कि वह मुरली से ईर्ष्या करती है, क्योंकि यही मुरली उसे कृष्ण से दूर ले आई है। यह दृश्य रसखान की गहरी संवेदनाओं और प्रेम की जटिलताओं को व्यक्त करता है।

“मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी वन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी।।
भाव तो वोहि मेरो ‘रसखानि’ सों तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी।
पै मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।”

यह पंक्ति कृष्ण के प्रति एक गोपी के निरंतर प्रेम और उसकी मुरली से जुड़ी भावनाओं की अभिव्यक्ति है। रसखान ने इस काव्य में अपने श्रद्धा और प्रेम को इतना गहराई से व्यक्त किया है कि प्रत्येक शब्द में कृष्ण की उपस्थिति और गोपी की असीम भक्ति महसूस होती है।रसखान के काव्य में गहरी संवेदनाएँ और भारतीय संस्कृति का प्रकट रूप मिलता है, जो सीधे, सरल और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है। उन्होंने ब्रजबालाओं के क्रिया-कलापों से लेकर दही बेचने तक के सामान्य कार्यों का वर्णन किया है, जो उनकी काव्य रचनाओं में एक खास स्थान रखते हैं। रसखान ने जो रीति-रिवाज और परंपराओं का चित्रण किया है, वह भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। उनके काव्य में माधुर्य भक्ति का दर्शन भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व बनकर उभरता है। विशेष रूप से भगवान कृष्ण के लीलाएँ और उनका वार्तालाप भारतीय संस्कृति के मूल्यों का आदान-प्रदान करते हैं। राधा और कृष्ण का प्रेम समस्त सृष्टि के प्रेम का प्रतीक बनकर सामने आता है, जिससे भारतीय संस्कृति की गहरी और शाश्वत धारा स्पष्ट होती है।रसखान का काव्य भारतीय संस्कृति का संचार करता है, और उनकी भक्ति के तत्व को लेकर उनकी कविता में एक प्रकार की निष्ठा का अहसास होता है। उनका सवैया, कवित्त, और दोहा जैसे काव्य रूप मध्यकालीन भक्ति कविता के अंग बने और भारतीय संस्कृति के संरक्षण का कार्य किया। रसखान का कवि हृदय कृष्ण के प्रति अपार प्रेम और भक्ति की अभिव्यक्ति करता है। वे भगवान कृष्ण के साथ अपने जीवन को जोड़ने का आदर्श प्रस्तुत करते हैं, और किसी भी रूप में भगवान के साथ रहना उनकी प्राथमिकता होती है।रसखान का यह कहना कि वे अगले जन्म में मानव, पशु, पक्षी या पत्थर के रूप में जन्म लें, लेकिन कृष्ण का साथ छोड़ने को तैयार नहीं हैं, उनके कृष्ण प्रेम की गहराई को दर्शाता है। उनका काव्य न केवल कृष्ण के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और उसके आदर्शों के प्रति एक सशक्त निष्ठा का प्रमाण भी है। वे ब्रज के लिए संसार के सभी सुखों का त्याग करने को तैयार हैं, जो उनके भारतीय संस्कृति के प्रति अडिग विश्वास को स्पष्ट करता है।रसखान का काव्य प्रेम के दर्शन पर आधारित है, जो मानवता का प्रतीक है। प्रेम ही वह तत्व है, जो मानव को मानवता का संस्कार देता है। यदि हम प्रेम के अध्ययन की बात करें, तो हमें रसखान के काव्य और उनके द्वारा व्यक्त भारतीय संस्कृति के दृष्टिकोण को समझना अनिवार्य है।

## सन्दर्भ सूची

1. रसखान ग्रंथावली सटीक - प्रो० देशराज सिंह भाटी (भक्ति-भावना सवैया -01) पेज संख्या-155
2. रसखान ग्रंथावली सटीक - प्रो० देशराज सिंह भाटी (फागलीला सवैया -186) पेज संख्या-273
3. रसखान ग्रंथावली सटीक - प्रो० देशराज सिंह भाटी (ब्रजप्रेम सवैया -252) पेज संख्या-315
4. रसखान ग्रंथावली सटीक - प्रो० देशराज सिंह भाटी (बाललीला सवैया - 32) पेज संख्या-179
5. रसखान ग्रंथावली सटीक- प्रो० देशराज सिंह भाटी (मुरली प्रभाव सवैया -128) पेज संख्या-233
6. प्रेमवाटिका- रसखान
7. रसखान रचनावली- विद्यानिवास मिश्र
8. रसखान पदावली संकलन- प्रभुदत्त ब्रह्मचारी
9. रसखान काव्य तथा भक्ति भावना- डॉ० मजदा असद
10. रसखान ग्रंथावली की भूमिका- आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र